International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628; Print ISSN: 2664-861X; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 22-11-2020; Accepted: 07-12-2020; Published: 22-12-2020
Volume 2; Issue 2; 2020; Page No. 71-73

महिला परक घरेलू तकनीकी एवं आधुनिकीकरणः ग्रामीण समाज का विश्लेषण एक सूक्ष्म स्तर पर मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में

सुनीता नेगी
मानव विज्ञान विभाग, हे0न0ब0ग0वि0वि0, श्रीनगर गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविधालय, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण समुदाय की महिलाओं पर केन्द्रित है, कि तकनीकी प्रगति का महिलाओं के जीवन में क्या योगदान हैं। शोध पत्र में महिलाओं की समाज में बदलती भूमिका को जानने का प्रयास किया गया है। विधुत उपकरणों का इस्तेमाल परिवार की समग्र अर्थव्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित करता है। महिलायें इन उपकरणों के इस्तेमाल के प्रति कितनी जागरूक हैं। 20वीं सदी में महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। महिलायें देश की आर्थिक उन्नति में अपना योगदान दे रही हैं। घर एवं कार्यक्षेत्र में अपनी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन कर रही हैं। साथ ही घर के पुरूशों के साथ आर्थिक सहयोग कर रही हैं, परिणामस्वरूप महिलायें सशक्तिरण की ओर अग्रसर हैं, महिला सशक्तिकरण में महिला परक आधुनिक तकनीकियां भी अहम भूमिका निभा रही हैं। इनके इस्तेमाल से महिलायें घर के कार्यों में मदद लेती हैं, तथा अपना समय एवं श्रम बचाकर रोजगार सम्बन्धी कार्य करती हैं। तकनीकीयों के इस्तेमाल का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर कितना पड रहा है उपरोक्त सभी तथ्यों की जांच की जायेगी।

मूलशब्दः महिला परक आधुनिक घरेलू तकनीकीयां, महिला स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण

प्रस्तावना
पृथ्वी पर जीवन का प्रारम्भ हुआ तो विकास की गति बहुत धीमी थी। 18वीं सदी में औधौगीकरण का प्रारम्भ हुआ तो विकास की गति तीव्र हुई।[1] मनुश्य ने अनेक क्षेत्रों में तकनीकीयों का अविश्कार किया, परिणामस्वरूप आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल ने पुरानी पीढ़ी को पीछे छोड़ दिया है एवं आधुनिकीरण प्रारम्भ हुआ। आधुनिकीकरण पूर्णतः सामाजिक प्रकिया से जुड़ा होता है जब समाज परम्परागत से आधुनिकता की ओर बढ़ता है।[2] आधुनिकीकरण एक व्यापक अवधारणा है। आधुनिकीकरण के कारण समाज मे बदलाव सकारात्मक एंव नकारात्मक दोनों रुपों में पाया जाता है। आधुनिकीकरण का अर्थ पारम्परिक मूल्यों एंव सामाजिक तथा सांस्कृतिक विरासत को नजरअंदाज किये बिना इनमे सुधार हेतु परिवर्तन है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप सामाजिक जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्णपरिवर्तन परिलक्षित हुये हैं। समाज में वेश–भूषा ही नही अपितु उनके रहन सहन एवं जीवन शैली में भी परिवर्तन आया है। अमर्त्य सेन के अनुसार आधुनिक तकनीकी वैश्विक अर्थव्यवस्था संप्रति विश्व के अनेक देशों में समृद्वि लाने मे कामयाब रही है।[3] आधुनिकीकरण आधुनिक समाज की विशेषता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव से मनुश्य ने अनेक तकनीकियां विकसित की हैं, और तकनीकि विकास से मानव प्रकृति का स्वामी बन गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समस्याओं को सुलझाने हेतु आधुनिक तकनीकीयों की खोज की गयी है। मानव अपनी आवश्यकताओं के अनुसार वस्तुओं को उत्पादित एवं निर्मित करता है। आधुनिकीकरण का प्रभाव महिला परक घरेलू तकनीकियों पर भी पड़ा है। उन्नीसवीं सदी में महिलाओं की जीवन शैली का तरीका बदलनें लगा है।[4] महिलायें प्रतिदिन तकनीकि एवं लोंगों से परिचित होती हैं।[5] आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय महिला को न्यायोचित मार्ग तथा शक्ति सम्पन्न्ता एवं प्रगतिशीलता प्राप्त हुयी है। जिसके कारण भारत में सम्भ्रान्त वर्ग का उदय हुआ।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय
उत्तराखण्ड में 13 जिले हैं जिसके अन्तर्गत टिहरी जनपद और जनपद का मुख्यालय नई टिहरी है टिहरी जनपद के अन्तर्गत 9 विकास–खण्ड चम्बा, नरेन्द्रनगर, भिलंगना, जौनपुर, कीर्तिनगर, जाखणीधार, प्रतापनगर, थौलधार, देवप्रयाग हैं। विकासखण्ड चम्बा एवं नरेन्द्रनगर शोध पत्र हेतु चयनित हैं।

शोध प्रविधि
तथ्यों के एकत्रण हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अर्न्तगत अवलोकन, सहभागी अवलोकन, असहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, समूह साक्षात्कार, अनुसूची आदि शोध विधियों का उपयोग आवश्यकतानुसार किया गया है, द्वितीयक स्रोतों के अन्तर्गत पत्र पत्रिकाओं, शोध पत्रों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रलेखों इत्यादिका उपयोग किया गया है,एवं संकलित तथ्यों का सारणीयन एवं विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला गया है।अध्ययन हेतु 400 महिलायें चयनित हैं, जिसमें पिछड़ी ग्रामीण एवं शहरी ग्रामीण महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

महिला परक आधुनिक एवं परम्परागतघरेलू तकनीकीयां
अध्ययन क्षेत्र की पिछड़ी ग्रामीण महिलायें 70 के दशक में इस्तेमाल होने वाली परम्परागत घरेलू तकनीकी का आज भी इस्तेमाल करती हैं। पत्थर से बना सिलवटटाधनिया, हल्दी, मिर्च, गरम मसाले इत्यादि पीसने हेतु इस्तेमाल किया जाता है। उलख्यारा एवं गिंजाले का प्रयोग धान कूटने के लिये किया जाता है, जिससे शुद्व एवं पौश्टिक भोजन प्राप्त होता है। गेंहू का आटा पीसने के लिये इस्तेमाल होने वाली परम्परागत तकनीकी घराट जो पानी से चलती है। दही से घी तथा मक्खन बनाने के लिये लकडी से बनी रौड़ी का इस्तेमाल किया जाता है जिसकी बनावट अगले सिरे से फूल की भांति होतीहै।घराट के अतिरिक्तहाथ की चक्की का इस्तेमाल किया जाता है जिसको स्थानीय भाशा में जांदरा कहते हैं। गेंहू पीसने एवं दालों को पीसने के लिये भी इसका इस्तेमाल किया जाताहैं, जिसको हाथ से चलाते हैं।'' 70 वर्शीय भैंतण निवासी आशाढ़ी देवी का कहना है कि वह जांदरा का इस्तेमाल कृशि

कार्यभार के अधिक होने पर करती थी घराट की गांव से दूरी अधिक थी तो वह दिन काम करती थी एवं जब घर में आटा खत्म हो जाता तो परिवार की खाधपूर्ति हेतु रात भर आवश्यकतानुसार हाथ की चक्की जांदरा का इस्तेमाल करके गेंहू पीसती जिससे उनको आटा प्राप्त होता था। दालों को पीसने के लिये भी इसका इस्तेमाल किया जाता जिससे मोटी दालें जैसे राजमा पकने में कम समय लेती हैं।'' उर्पयुक्त हाथ से इस्तेमाल होने वाली सभी तकनीकीयों का स्थान विधुत संचालित आधुनिक तकनीकीयों ने ले लिया है। महिलायें घर में अलग अलग तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल करके कम समय में बेहतर प्रर्दशन करती हैं। समय एवं श्रम बचाकर समय का सदुपयोग अन्य कार्यों जैसे सामाजिक भागीदारी, घर में बच्चों को पढ़ाना एवं पति के साथ आर्थिक भागीदारी में सहयोग करती हैं।[6] घराट का स्थान बिजली से चलने वाली आधुनिक तकनीकीचक्की ने ले लिया है। मिक्सी, माइक्रोवेव, फ्रिज, वाशिंग मशीन, गैस, प्रैशर कुकर, मट्ठा बनाने की मशीन, वाटर प्यूरीफायर, गीजर इत्यादि ने ले लिया है,परम्परागत घरेलू तकनीकीयों के इस्तेमाल में जहां महिलायें सुबह जल्दी उठकर चूल्हे पर खाना बनानें में, उल्ख्यारा में धान कूटना, सिलवट्टा में मसाला पीसना, रौडी से मट्ठा बनानें में, दूर दराज गाढ़ गदेरों में हाथ से कपड़ें धोने में, घण्टों समय व्यतीत करती थी, वहीं वर्तमान समय में आधुनिक तकनीकीयों के इस्तेमाल से यह काम मिनटों में हो जाता है।घर में इस्तेमाल होने वाली महिला परक आधुनिक तकनीकीयों की बाजारों में भरमार है, जहां त्यौहारों में इन पर विशेष छूट भी मिलती है एवं महिलायें इनका लाभ लेती हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं के लिये घरों में शौचालय की सुविधा होने से महिलाओं को घर से बाहर शौच हेतु नही जाना पडता। जिसके अभाव में महिलाओं को कई असुविधाओं का सामना करना पडता था। घर घर में शौचालय हैं। स्वच्छ भारत मिशन के अंर्तगत ग्रामीण लोगों द्वारा इनका लाभ लिया जा रहा है।

महिला परक आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का स्वास्थ्य पर प्रभाव

विकास बदलाव की आधाभूत प्रकिया है। जिसमें सम्पूर्ण समाज की आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौतिक संरचना, मूल्य प्रणाली तथा लोगों के जीवन जीनें का तरीका शमिल होता है।[7] आधुनिक घरेलू तकनीकीयों ने महिलाओं की जीवन शैली को सरल बना दिया है लेकिन इनके स्वास्थ्य दुश्परिणाम भी हैं। स्वास्थ्य पर दुश्प्रभावों के अर्न्तगत ए0सी0 त्वचा को रूखी करता है एवं यह त्वचा संबंधी खुजली का कारण भी है। यह एपीडर्मिस से पानी को सोखता है। जो हमारे शरीर में रक्तप्रवाह हेतु अत्यंत आवश्यक है।[8] प्रत्येक मानव शरीर में गर्म जलवायु को सहन करने की क्षमता होती है। लेकिन ए0सी0 का इस्तेमाल इस क्षमता को खत्म करता है। जो शारीरिक एवं मानसिक तनाव का कारण है।[9] वाशिंग मशीन के इस्तेमाल से हाथों की मांसपेशियों का व्यायाम नही होता।घर की रसोई में विधुत उपकरणों के इस्तेमाल से खाना बनाने का स्वरूप बदल गया है। (Lee1989) के अनुसार माइक्रोवेव में दूध गर्म करने से एमीनो एसिड की सक्रियता खत्म हो जाती है। (Koop1986) के अनुसार यह तंत्रिका तंत्र एवं किडनी को नुकसान पंहुचाता है।[10] वाटर प्यूरीफायर पानी के शुद्धिकरण हेतु अत्यंत भरोसेमंद आधुनिक तकनीकी है, जो पानी से सीसा, आर्सेनिक, पारा जैसी हानिकारक धातुओं कों नही अपितु कैल्शियम एवं मैग्निशियम जैसे कुछ आवश्यक खनिजों को भी हटाती है।[11] पिछड़ी ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें जो वर्तमान समय में भी परम्परागत घरेलू तकनीकीयों का उपयोग कर रही हैं उनका समय एवं श्रम अधिक लगता है, लेकिन अनकों शुद्व एवं पौश्टिक खाध पदार्थ उपलब्ध होते हैं, एवं शारीरिक श्रम अधिक होने से उनमें वर्तमान समय में होने वाली मधुमेह, अवसाद, मोटापा, ब्लड प्रैशर जैसी बीमारियां नही पायी गयी हैं। इसके विपरीत शहरी ग्रामीण महिलायें आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का इस्तेमाल अधिक करती हैं। शारीरिक श्रम की कमी के कारण शहरी ग्रामीण महिलाओं में डिप्रैशन, मोटापा, मधुमेह, ब्लड प्रैशर इत्यादि बीमारियों की अधिकता पायी गयी है।

महिला परक आधुनिक घरेलू तकनीकी एवं आर्थिकी

तकनीकीयों का इस्तेमाल आर्थिकी से सम्बन्धित है। घर में इस्तेमाल होने वाली अति आधुनिक तकनीकीयां महिलाओं की आर्थिक एवं भौगोलिक स्थिति तथा उनकी जागरूकता पर निर्भर करती है। घर में उपलब्ध होने वाली अधिकांश आधुनिक तकनीकीयां विधुत द्वारा संचालित होती हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में विधुत की उपलधता पर भी आधारित होती है एवं इनसे बिजली की खपत अधिक होने से बिजली का बिल भी अधिक आता है। इसलिये महिलाओं द्वारा इनका इस्तेमाल कम किया जाता है। अधिक उम्र की महिलाओं के घरों में तकनीकीयां उपलब्ध होने पर भी इनमे जागरूकता नही होने से इनका इस्तेमाल नही करती हैं। अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं के पास सर्वाधिक गैस उपलब्ध है,जो महिलाओं को प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अर्तंगत उपलब्ध हुये है, लेकिन महंगी हैं और सड़क से गांव की अधिक दूरी होने के कारण इनको समय से उपलब्ध भी नही होती हैं तो ग्रामीण महिलायें इसका इस्तेमाल बहुत कम करती हैं। महिलायें लकड़ी के चूल्हे का अधिक उपयोग करती हैं। लकड़ियां घर से कई किलोमीटर दूर जाकर जंगलो से लाती हैं। सम्पूर्ण विश्व की लगभग आधी आबादी कम आय के कारण खाना पकाने के लियें ठोस ईंधन का इस्तेमाल करती हैं, एवं ठोस ईंधन से निकलने वाला धुंआ गंभीर स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियों का कारण है।[12] विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 4.3 मिलियन अविकसित शिशु मृत्यु घरों से निकलने वालें धुंऐं के कारण होती हैं।[13] आधुनिक घरेलू तकनीकीयां वाटर प्यूरीफायर, ए0सी0, फ्रिज, माइक्रोवेब, वाशिंग मशीन इत्यादि आर्थिक रूप से सम्पन्न शहरी ग्रामीण परिवार की महिलाओं के पास है।

तालिका 1: अध्ययन क्षेत्र की महिलाओं द्वाराइस्तेमाल के आधार पर आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का वर्गीकरण

क्र0स0	घर में इस्तेमाल होने वाली आधुनिक तकनीकीयॉ	पिछड़ी ग्रामीण		शहरी ग्रामीण		योग	
		सख्या	प्रति0	संख्या	प्रति0	संख्या	प्रति
1	वाशिंग मशीन	10	5.00	66	33	76	19
2	मठ्ठा बनाने की मशीन	17	8.41	35	17.5	52	13
3	गीजर	.—	—	38	19	38	9.5
4	ए0सी0	—	—	34	17	34	8.5

विश्लेषणः उपरोक्त सारिणी में 400 महिला उत्तरदाताओं में पिछड़ी ग्रामीण एवं शहरी ग्रामीण क्रमशः 200, 200 हैं जिसमें महिला उत्तरदाताओं के आधार पर वाशिंग मशीन इस्तेमाल करने वाली महिलाओं का कुल योग 76 (19.00 प्रति0) जिसमें पिछड़ी ग्रामीण 10 (5.00 प्रति0) एवं शहरी ग्रामीण 66 (33.00 प्रति0) हैं।गीजर का योग 38 (9.50 प्रति) मात्र शहरी ग्रामीण 38 (19.00 प्रति0) कर रही हैं। मट्ठा बनाने हेतु मशीन का योग 52 (13.00 प्रति0) जिसमें पिछड़ी ग्रामीण 17 (8.41 प्रति0) एवं शहरी ग्रामीण 35 (17.5 प्रति0) है। ए0सी का योग 34 (8.50 प्रति 0) जिसमें मात्र शहरी ग्रामीण 34 (17.00 प्रति0) है।

तालिका 2: महिलाओं द्वारा इस्तेमाल के आधार पर आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का वर्गीकरण

क्र0स0	रसोई में इस्तेमाल होने वाली आधुनिक तकनीकीयां	पिछड़ी ग्रामीण		शहरी ग्रामीण		योग	
		संख्या	प्रति0	संख्या	प्रति0	संख्या	प्रति0
1	गैस	187	93.05	178	89.00	365	91.25
2	फ्रिज	68	34.00	164	82.00	232	58.00
3	इंडक्सन	29	14.5	50	25.00	79	19.75
4	वाटरफ्यूरीफायर	1	0.50	34	17.00	35	8.75
5	माइक्रोवेव	—	—	10	5	10	2.5

विश्लेषण

उपरोक्त सारिणी में 400 महिला उत्तरदाताओं में पिछड़ी ग्रामीण एवं शहरी ग्रामीण क्रमशः 200,200 हैं। जिसमें गैस का इस्तेमाल करने वाली महिलाओं का कुल योग 365 (91.25 प्रति0) जिसमें पिछड़ी ग्रामीण 187 (93.05 प्रति0) एवं शहरी ग्रामीण 178 (89.00 प्रति0) है। माइक्रोबेव का योग 10 (2.5 प्रति0) जिसमें पिछड़ी ग्रामीण 0 एवं शहरी ग्रामीण महिलायें 10 (5.00 प्रति0) है। इंडक्शन का योग 79 (19.75 प्रति0) जिसमें पिछडी ग्रामीण 29 (14.5 प्रति0) एवं शहरी ग्रामीण 50 (25 प्रति0) है। रेफ्रिजरेटर का योग 232 (58.00 प्रति0) जिसमें पिछड़ी ग्रामीण 68 (34.00 प्रति0) एवं शहरी ग्रामीण 164 (82.00 प्रति0) है। वाटरप्यूरीफायर का योग 35 (8.75 प्रति0) जिसमें पिछडी ग्रामीण 1 (0.50 प्रति0) एवं ग्रामीण 34 (17. 00 प्रति0) है।

निष्कर्ष

उर्पयुक्त तथ्यों के विश्लेशण में पाया गया किमहिला सशक्तिकरण मूं तकनीकीयां सहायक हैं, महिला परक आधुनिक घरेलू तकनीकीयां वर्तमान में शरीर के लिये आरामदेह हैं। शोध के दौरान शहरी ग्रामीण महिलाओं में अति आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का इस्तेमाल पाया गया है। परिणामस्वरूप इनमें मोटापा, अनिद्रा, डायबिटिज, ब्लड़ प्रैशर, थायरायड़ इत्यादि बीमारियां भी पायी गयी हैं। पिछड़ी ग्रामीण महिलायें आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का इस्तेमाल कम करती है। इनका शरीरिक श्रम अधिक होने से शरीर के अलग अलग हिस्सों में दर्द एवं प्रजनन स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियां दृश्टिगत हैं। समग्र अध्ययन में पाया गया हैं महिलायें तकनीकी के इस्तेमाल से सशक्त है लेकिन इनके सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणाम महिलाओं के स्वास्थ्य पर दृश्टिगत हैं। आधुनिक घरेलू तकनीकीयों का इस्तेमाल भविष्य में गंभीर स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारियों का कारण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mohyuddin Nwar, Chaudhry Rehmaan Ur Hafeez, mbreen Mamonah. Perception and Process of Development in Zandra. Word System Analysis at Microlevel In Anthropological Perspective. 2012; 1(3):1.
2. Drews Kathrin. Thesis. The Effect of Modernization on The Representation of Women and Parliament" A Case Study of Estonia
3. सहं राम गोपाल, 2011: ''वैश्वीकरण मीड़िया और समाज'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 337, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पेज न0–64।
4. Tandon RK. "Women In Modern India", Satish Garg For Indian Publishers Distribution, 156-D Kamla Nagar, Delhi, 1998, 22
5. Das Kumar, Das Banishree. "Technological and Women in India with Special References to the Rural Sector." xiv. International Economic History, Congress Helsinki Finland 21 to 25A ug. Session 14. Technology. Genderand The Division of Labour, 2016, 3.
6. Mohyuddin A Nwar, Nadia Begum. Changing Role of Women Due to Technology at Household Level: A Case Study of Village Chontra, District Rawalpindi, Pakistan.'' J. sian Dev. Stud, 2013; 2(3).https:s//www. Research sate.net.p.no.100
7. Lexander KC. The Process of Development'' New Delhi. SEGA Publication, 1994.''
8. Times of India 2017:"A C Cause More Harm than Good", 20 Nov, 15:13.http://timesofindia. India times.com
9. Cao Bin, Shang Qi, Dai Zizhu, Zhu Yingxin. "The Impact of Air Conditioning Usage on Sick Building Syndrome During Summer in China. 2013; 22(3):490-497 http://journals. sagepub.com.
10. Upasana Shaista, Parveen, Chakravarty A Rchana. "Effect of Micro waving on Different Foods and Biological Systems", sian Journals of Home Science. 2014; 9(2):651-654.
11. Lee Kah Peng, Tom Crnot, David Mattia. "A Review of Reverse Osmosis Membrane Materialsfor Desalination – Development to Date and Future Potential'', Journal of Mambrane Science. 2011; 370(1-2):1-22. https// www.Scholar.google.co.in.
12. Mohapatra Ispa, Das Sai Chandan, Samantaray Sonia. ''Health Impacton Women Using Solid Cooking Fuels In Rural Area of Cuttack District Odisha.''(Journal Of family Medicinend Primary Care), 2018, 11.
13. Lessandra N Bazzano. "Traditional Cooking Practices and Preferences for Store Features A Mong women In Rural Senegal; Informing improved Cook stove Design and Interventions.'' PLOSONE), 2018. https//www.ncbi.nlm. nih.gov/ pmc/article/PMC6245512.